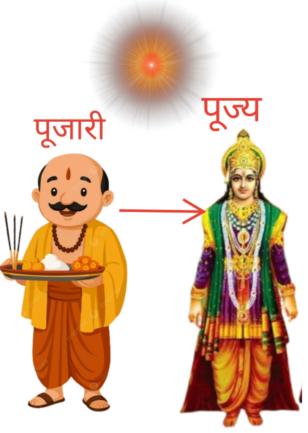

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - बाप आये हैं तुम्हें पुजारी से पूज्य बनाने, पूज्य से पुजारी और पुजारी से पूज्य बनने की पूरी कहानी तुम बच्चे जानते हो"

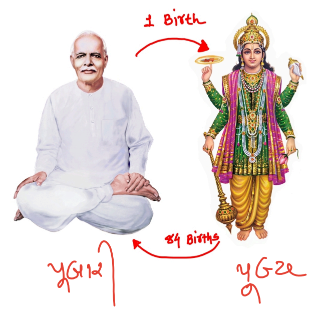

प्रश्नः कौन सी बात दुनिया वालों के लिए असम्भव लगती और तुम सहज उसे अपने जीवन में धारण करते हो?

उत्तर:-दुनिया वाले समझते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में रहते पवित्र रहना - यह तो बिल्कुल असम्भव है और तुम सहज धारण कर लेते, क्योंकि जानते हो इससे स्वर्ग की बादशाही मिलती है। तो यह बहुत सस्ता सौदा हुआ ना।

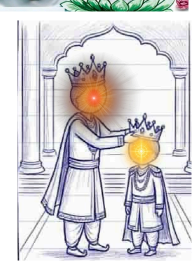

गीत:-यह कौन आज आया सवेरे... Click

ये कौन आज आया सवेरे सवेरे
के दिल चौंक उठ्ठा सवेरे सवेरे
कहा रूप ने चाँद है चौदहवीं का (2)
मगर चाँद कैसा सवेरे सवेरे

गया मन का धीरज, बढ़ी बेकली भी (2)
ये मुझको हुआ क्या...
ये मुझको हुआ क्या सवेरे सवेरे

आते ही एक तरहदार ने दिल छीन लिया (2)
दिलरुबा बन के दिलदार ने दिल छीन लिया
पापी चितवन के पीछे यार ने दिल छीन लिया
दे के धोखा किसी ऐयार ने दिल छीन लिया

आँखों में जादू, बातों में शोला (2)
दिया कैसा चरका सवेरे सवेरे (2)
ये कौन आज आया सवेरे सवेरे

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ओम् शान्ति। अन्धियारा और सवेरा, दुनिया के लिए बिल्कुल अलग है। वह तो कॉमन है। तुम बच्चों का सवेरा अन-कॉमन है। दुनिया को पता नहीं अन्धियारा और सवेरा किसको कहा जाता है। वास्तव में यह अन्धियारा और सवेरा कल्प के इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर होता है। अभी अज्ञान अन्धियारा दूर होता है। गाते भी हैं - ज्ञान सूर्य प्रगटा। वह सूर्य तो रोशनी देने वाला है। यह है ज्ञान सूर्य की बात। भक्ति को अन्धियारा, ज्ञान को रोशनी कहा जाता है। अभी तुम बच्चे जानते हो सवेरा हो रहा है। भक्ति मार्ग का अन्धियारा पूरा हो जाता है। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है क्योंकि जिसकी भक्ति करते हैं उनका ज्ञान कुछ भी नहीं है। वेस्ट ऑफ टाइम होता है। गुड़ियों की पूजा होती रहती है। आधाकल्प से यह गुड़ियों की पूजा होती है। पूजा जिसकी करते उनका पूरा ज्ञान भी चाहिए। देवी-देवताओं का है पूज्य घराना। वही पूज्य फिर पुजारी बनते हैं, पूज्य से पुजारी, पुजारी से पूज्य बनने की कितनी लम्बी चौड़ी कहानी है। मनुष्य तो पूज्य पुजारी का अर्थ भी नहीं समझते हैं। परमपिता परमात्मा आते ही हैं संगम पर, जबकि अन्धियारा पूरा होता है। सवेरा

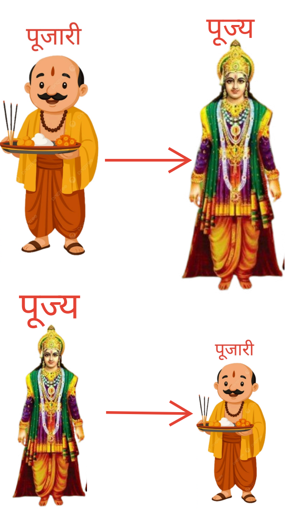

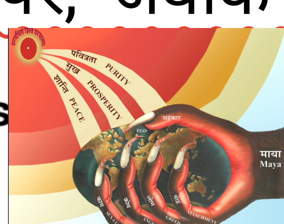

10-09-2026

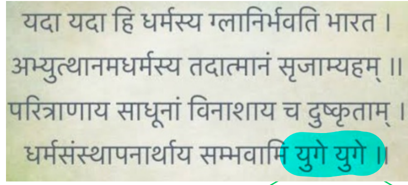
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥

न्ति

Here is the Fault

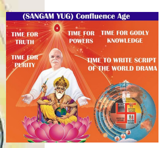

बनाने आते हैं। परन्तु उन्होंने कल्प के संगमयुगे के बदले युगे-युगे लिख दिया है। जब 4 युग पूरे होते हैं तो पुरानी दुनिया पूरी हो फिर नई दुनिया शुरू होती है। तो इसको कहेंगे Actually कल्याणकारी संगमयुग। इस समय सब नर्कवासी हैं। Simple Logic जब कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग पधारा तो जरूर नर्क में था। यह कोई समझते नहीं कि हम नर्क में हैं। रावण ने सबकी बुद्धि को एकदम ताला लगा दिया है। सबकी बुद्धि एकदम मारी गई है। बाप समझाते हैं - भारतवासियों की बुद्धि सबसे विशाल थी। फिर जब बिल्कुल ही पत्थरबुद्धि बन जाते हैं तब ही दु:ख पाते हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार बेसमझ बनना ही है। बेसमझ बनाती है माया। पूज्य को समझदार और पुजारी को बेसमझ कहा जाता है। कहते भी हैं हम नीच पापी हैं। परन्तु समझदार कब थे, यह पता नहीं पड़ता। रावण रूपी माया बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि बना देती है। अभी तुमको समझ आई है कि हम ही पूज्य थे फिर पुजारी बनें। अभी तुम बच्चों को खुशी होती है। बहुत दिनों से चिल्लाते आये हैं कि हमको शान्ति मिले अथवा जन्म मरण से छूट जायें। लेकिन इस माया की जजीरों से मुक्ति हो जाए, यह ज्ञान भी

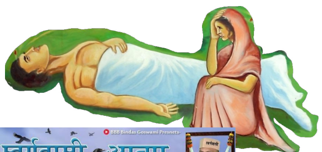

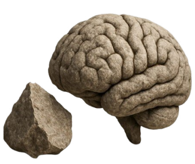

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

किसकी बुद्धि में नहीं है।

Point to be Noted

Point to ponder deeply...

तुम जानते हो सीढ़ी उतरते आते हैं, सतयुग में तो फिर भी धीरे-धीरे उतरते हैं, टाइम लगता है। सुख की सीढ़ी उतरने में टाइम लगता है। दु:ख की सीढ़ी जल्दी-जल्दी उतरते हैं। सतयुग त्रेता में है 21 जन्म, द्वापर-कलियुग में 63 जन्म, आयु कम हो जाती है।

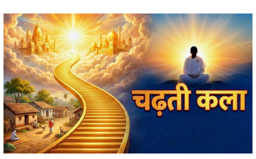

अभी तुम जानते हो हमारी चढ़ती कला चपटी में हो जाती है। गाते भी हैं जनक को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली। परन्तु जीवनमुक्ति का अर्थ समझते नहीं हैं। एक जनक को जीवनमुक्ति मिली वा सारी दुनिया को मिली? अभी तुम्हारी बुद्धि का ताला खुल गया है। किसकी डल बुद्धि होती है तो कहते हैं परमात्मा इनको अच्छी बुद्धि दो। सतयुग में ऐसी कोई बात नहीं।

जो आत्मायें बहुतकाल परमात्मा से अलग रहती हैं, उनका भी हिसाब है। बाप जब परमधाम में थे, उस समय जो आत्मायें उनके साथ मुक्तिधाम में रहती हैं, पिछाड़ी में आती हैं, वह बहुत समय साथ रहती हैं। v/s हम तो थोड़ा टाइम

8 अरब की आबादी तक का सफर

आबादी	साल	कितने वर्ष लगे
1 अरब	1804	पहली बार दुनिया में 1 अरब लोग हुए
1 से 2 अरब	1804 से 1927	123 साल लगे
2 से 3 अरब	1927 से 1960	33 साल
3 से 4 अरब	1960 से 1974	14 साल
4 से 5 अरब	1974 से 1987	13 साल
5 से 6 अरब	1987 से 1999	12 साल
6 से 7 अरब	1999 से 2011	12 साल
7 से 7.9 अरब	2011 से 2022	11 साल

15 नवंबर 2022 को होंगे आठ अरब लोग

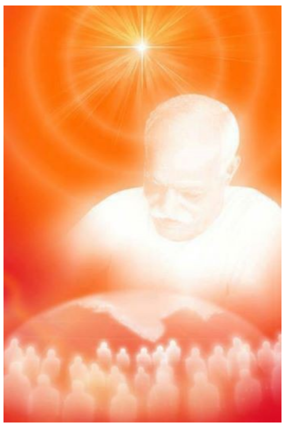

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वहाँ रहते हैं। पहले-पहले हम बाप से बिछुड़ते हैं इसलिए गाया जाता है आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल... उन्हों का ही अब मेला होता है जो बहुत समय बाप से अलग रहे हैं। जो वहाँ बहुत समय साथ रहते हैं, उनको नहीं मिलते हैं। बाप कहते हैं - खास तुम बच्चों को मैं पढ़ाने आता हूँ। तुम बच्चों के साथ हूँ तो सबका कल्याण होता है। अभी सबकी कयामत का समय है। अभी सब हिसाब-किताब चुक्तू कर चले जायेंगे। बाकी तुम राज-भाग पायेंगे। यह बातें कोई की बुद्धि में नहीं हैं। गाते भी हैं गॉड फादर, लिबरेटर, गाइड। दु:ख से लिबरेट कर शान्तिधाम में ले जाने के लिए गाइड बनते हैं। सुखधाम के लिए गाइड नहीं बनते। आत्माओं को शान्तिधाम में ले जाते हैं, वह है निराकारी दुनिया - जहाँ आत्मायें रहती हैं। परन्तु वहाँ कोई जा नहीं सकता क्योंकि पतित हैं, इसलिए पतित-पावन बाप को पुकारते हैं। खास भारतवासी जब उल्टे बन जाते हैं तब बेहद बाप को ही कुत्ते-बिल्ली, पत्थर-ठिक्कर में ले जाते हैं। वन्डर है ना। अपने से भी मुझे नीचे ले जाते हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। किसका दोष नहीं है, सब ड्रामा के वश हैं। ईश्वर के वश नहीं। ईश्वर

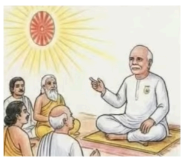

चढ़ाओ नशा...

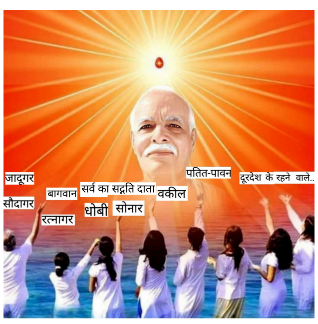

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Mind very well... M.M.M.....imp.

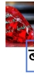

25/03/2025

बाप सर्वशक्तिमान है या ड्रामा? ड्रामा है फिर उनमें जो एक्टर्स हैं उनमें सर्वशक्तिमान कौन है? शिवबाबा। और फिर रावण। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। घड़ी-घड़ी बाप

10-09-2026 ान्ति "बापदादा" मधुबन

से भी ड्रामा तीखा है। बाप कहते हैं - मैं भी ड्रामा अनुसार अपने समय पर आऊंगा। मेरा आना एक ही बार होता है। भक्ति मार्ग में मनुष्य कितने धक्के खाते हैं। तुमको बाप मिला है। बाप से चपटी में वर्सा लेना है। वर्सा मिल गया फिर धक्के खाने की दरकार नहीं। भगवान खुद कहते हैं मैं आकर वेदों शास्त्रों का सार समझाता हूँ। पहले सचखण्ड था फिर झूठ खण्ड कैसे बना, यह किसको पता नहीं। गीता किसने सुनाई, यह भी भारतवासी नहीं जानते। भारत का ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। देवता धर्म वाले ही सतोप्रधान पूज्य से जब तमोप्रधान पुजारी बन जाते हैं तब देवता धर्म प्राय:लोप हो जाता है फिर बाप आकर फिर से उस धर्म की स्थापना करते हैं। चित्र भी हैं, शास्त्र भी हैं। भारतवासियों का एक ही शास्त्र शिरोमणी गीता है। हर एक अपने धर्म को ही भूल गये हैं, इसलिए नाम बदल हिन्दू रख दिया है। ड्रामा में नूँध है। आत्मा ही पुनर्जन्म में आते तमोप्रधान बन जाती है, खाद पड़ जाती है।

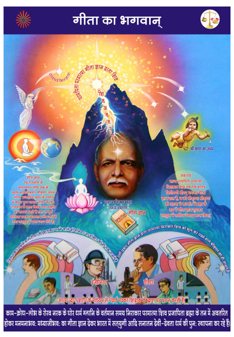

Points: ज्ञान योग धारणा सेव ....

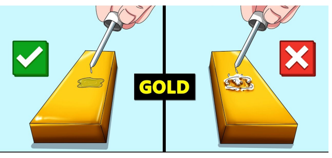

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

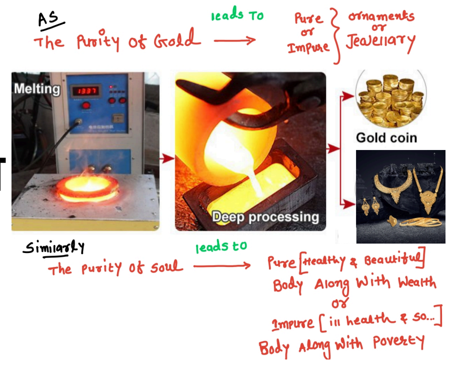

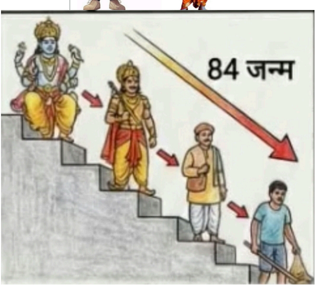

तुम जानते हो हम सच्चे जेवर थे, अब झूठे बन गये हैं। जेवर शरीर को कहा जाता है। शरीर द्वारा ही पार्ट बजाते हैं। हमको कितना लम्बा 84 जन्मों का पार्ट मिला हुआ है। देवता, क्षत्रिय... आपे ही पूज्य, पुजारी तुम बनते हो। मैं अगर पूज्य फिर पुजारी बनूँ तो तुमको पूज्य कौन बनाये। मैं तो एवर पावन, ज्ञान का सागर, पतित-पावन हूँ। तुम ही पूज्य पुजारी बन दिन और रात में आते हो। परन्तु वो लोग जानते नहीं। बाप समझाते हैं दुनिया झूठी बनती जाती है तो इतनी झूठी कहानियाँ बैठ बनाई हैं। व्यास ने भी कमाल की है। अब व्यास भगवान तो नहीं है। भगवान ने तो आकर ब्रह्मा द्वारा वेदों शास्त्रों का सार समझाया है। उन्होंने शास्त्र दे दिये हैं ब्रह्मा को। अब भगवान कहाँ? ऐसे तो नहीं विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। तो विष्णु ने बैठ शास्त्रों का सार बताया। नहीं, ब्रह्मा द्वारा समझाया है। त्रिमूर्ति के ऊपर है शिवबाबा, वह बैठ सार बताते हैं - ब्रह्मा द्वारा। जिनके द्वारा समझाते हैं वही फिर पालना करेंगे। तुम हो ब्रह्माकुमार कुमारियां। ब्राह्मण वर्ण है ऊंच ते ऊंच। तुम अभी हो ईश्वरीय सन्तान। ईश्वर के रचे हुए

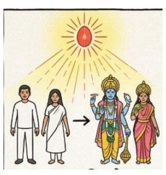

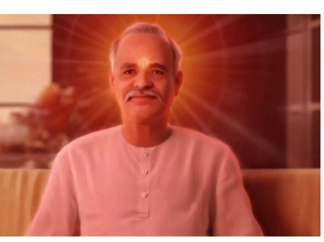

Attention Please..!

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

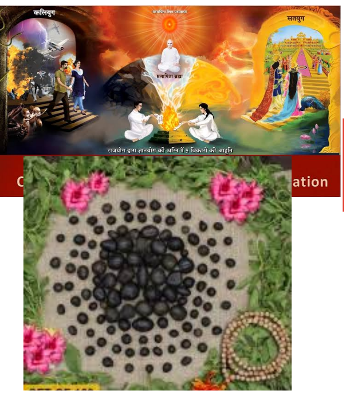

यज्ञ की तुम सम्भाल करते हो। इस ज्ञान यज्ञ में सारी पुरानी दुनिया स्वाहा हो जानी है। इनका नाम रखा है - राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र ज्ञान यज्ञ। राजाई प्राप्त कराने के लिए बाप ने यज्ञ रचा है। वह यज्ञ रचते हैं तो मिट्टी का शिव और शालिग्राम बनाते हैं। उत्पत्ति कर, पालना कर फिर खलास कर देते हैं।

देवताओं की मूर्तियां भी ऐसे ही करते हैं। जैसे छोटे बच्चे गुड़ियों का खेल करते हैं, ऐसे यह भी करते हैं। अब बाप के लिए तो कहते हैं स्थापना, पालना फिर विनाश करते हैं, पहले स्थापना।

अभी तुम मृत्युलोक में अमरलोक के लिए पढ़ रहे हो। यह तुम्हारा मृत्युलोक का अन्तिम जन्म है। बाप आते हैं अमरलोक स्थापन करने। एक पार्वती को कथा सुनाने से क्या होगा। अमरनाथ शंकर को कहते हैं, उनको पार्वती देते हैं। अब शंकर पार्वती स्थूल में आ कैसे सकते? जबकि उन्हों को सूक्ष्मवतन में दिखाया है। अभी तुमको समझाया है जगत अम्बा, जगत पिता लक्ष्मी-नारायण बनते हैं।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

लक्ष्मी-नारायण फिर 84 जन्मों के बाद, जगत अम्बा, जगतपिता बनते हैं। वास्तव में जगत अम्बा है पुरुषार्थी, फिर लक्ष्मी है पावन प्रालब्ध। महिमा जास्ती किसकी है? जगत अम्बा पर देखो कितना मेला लगता है। काली कलकत्ते वाली मशहूर है। काली माता के पास भला काला पिता क्यों नहीं बनाया है? वास्तव में जगत अम्बा आदि देवी ज्ञान चिता पर बैठ काले से गोरी बनती है। पहले ज्ञान ज्ञानेश्वरी है फिर राज-राजेश्वरी बनती है। यहाँ तुम आये हो ईश्वर से ज्ञान लेकर राज-राजेश्वरी बनने।

Multi Trillion dollar Question..

लक्ष्मी-नारायण को राज्य किसने दिया? ईश्वर ने।

अमरकथा सत्य नारायण की कथा बाप ही सुनाते हैं, सेकेण्ड में जिससे नर से नारायण बनते हैं।

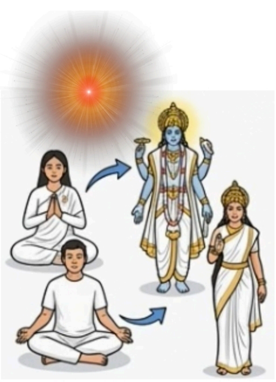

अभी तुम बच्चों के कपाट खुल गये कि काम महाशत्रु है। कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहकर पवित्र रहना असम्भव है। समझाया जाता है - बाप स्वर्ग का रचयिता है तो जरूर वह अपने बच्चों को स्वर्ग की बादशाही देंगे। तो स्वर्ग की बादशाही पाने के लिए

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

एक जन्म तो पवित्र रहना पड़ेगा। यह तो सस्ता सौदा हुआ ना। व्यापारी लोग इस बात को अच्छा उठायेंगे क्योंकि व्यापारी लोग दान भी करते हैं। धर्माऊ भी निकालते हैं। बाप कहते हैं - **यह सौदा कोई विरला करते हैं।** कितना सस्ता व्यापार है। फिर भी कई हैं जो सौदा करके फिर फारकती भी दे देते हैं। यह नॉलेज बाप के सिवाए कोई समझा न सके। ज्ञान सागर एक ही है, वही समझाते हैं। जो पावन पूज्य था फिर 84 जन्म के अन्त में पुजारी बना है। इनके तन में मैंने प्रवेश किया। प्रजापिता तो यहाँ होगा ना। अब तुम पुरुषार्थ कर फरिश्ता बन रहे हो। अब भक्ति मार्ग की रात के बाद ज्ञान अर्थात् दिन होता है। तिथि तारीख तो है नहीं। शिवबाबा कब आया, किसको भी पता नहीं है। कृष्ण जयन्ती धूमधाम से मनाते हैं। शिव जयन्ती का पूरा किसको मालूम भी नहीं है। अच्छा!

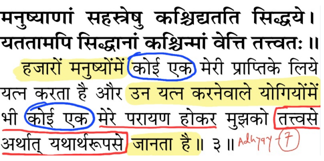
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३ ॥ Adhyay 7

Exclusive Authority of Shiv baba

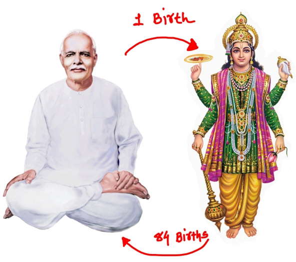

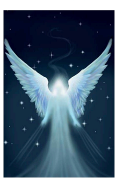

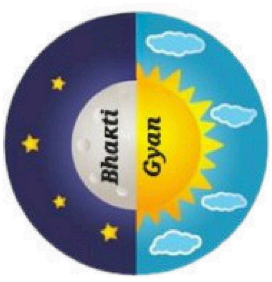

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

Points: ज्ञान योग धार

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् श

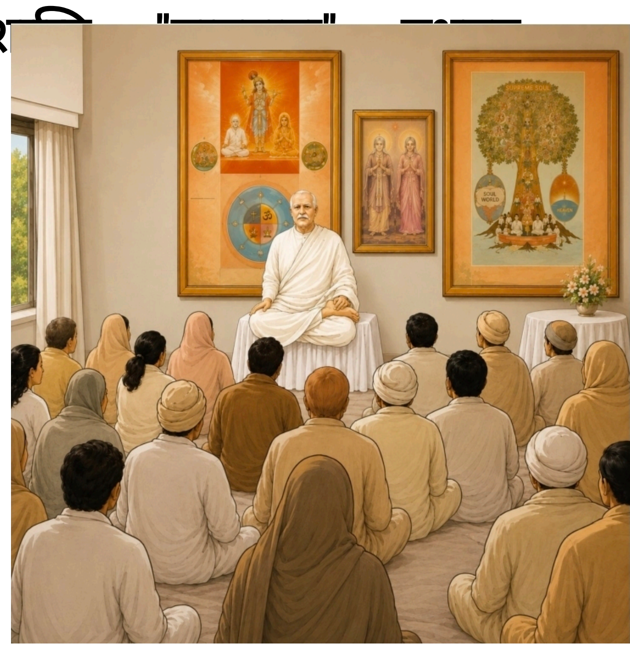

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) इस कल्याणकारी युग में एक बाप से ही सच्ची सत्य नारायण की कथा, अमरकथा सुननी है। बाकी जो कुछ सुना है उसे भूल जाना है।

2) सतयुगी बादशाही लेने के लिए इस एक जन्म में पवित्र रहना है। फरिश्ता बनने का पुरुषार्थ करना है।

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- हर संकल्प, समय, शब्द और कर्म द्वारा ईश्वरीय सेवा करने वाले सम्पूर्ण वफादार भव

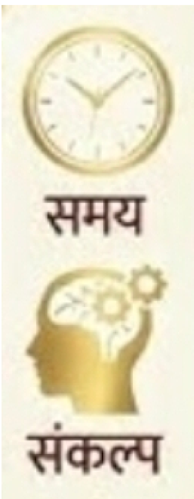

Characteristics of

सम्पूर्ण वफादार उन्हें कहा जाता है जो हर वस्तु की पूरी-पूरी सम्भाल करते हैं। कोई भी चीज़ व्यर्थ नहीं जाने देते। जब से जन्म हुआ तब से संकल्प, समय और कर्म सब ईश्वरीय सेवा अर्थ हो।

यदि ईश्वरीय सेवा के बजाए कहाँ भी संकल्प वा समय जाता है, व्यर्थ बोल निकलते हैं या तन द्वारा व्यर्थ कार्य होता है तो उनको सम्पूर्ण वफादार नहीं कहेंगे। ऐसे नहीं कि एक सेकण्ड वा एक पैसा व्यर्थ गया - तो क्या बड़ी बात है। नहीं।

जरा सोचो तो सही
कितनी गुह्य परिभाषा है।

सम्पूर्ण वफादार अर्थात् सब कुछ सफल करने वाले।

यथार्थ:
यह संस्कृत भाषा का शब्द है जो 'यथा' (जैसे) और 'अर्थ' (मतलब) से मिलकर बना है।
यथार्थ का सामान्य अर्थ वास्तविकता, सत्य या किसी वस्तु/घटना का जैसा है वैसा ही रूप है।
यह कल्पना या भ्रम से बिल्कुल अलग होता है।

← No मनमत, No परमत should be included

स्लोगन: श्रीमत को यथार्थ समझकर उस पर कदम-कदम चलने में ही सफलता समाई हुई है।

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य

“राजऋषि सतयुगी होते हैं"

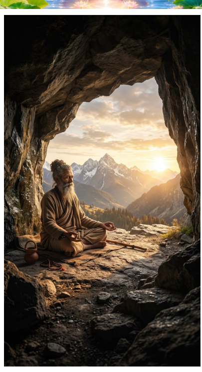

लोग यह जो कहते हैं द्वापर में राजऋषि थे, जिन्होंने बैठ यह वेद शास्त्र रचे क्योंकि वो त्रिकालदर्शी थे। अब वास्तव में राजऋषि हम सतयुग में ही कह सकते हैं क्योंकि वहाँ विकारों को पूरा जीते हुए हैं अर्थात् कमल के फूल समान जीवनमुक्त अवस्था में रहते राजाई चलाते हैं। बाकी यह जो द्वापर में परमात्मा को प्राप्त करने के लिये तप करने वाले ऋषि हैं जिन्होंने वेद शास्त्र रचे हैं सतयुग में तो वेद शास्त्रों की जरुरत ही नहीं रहती, न हम उन्हों को त्रिकालदर्शी कह सकते हैं। जब हम ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को त्रिकालदर्शी नहीं कह सकते हैं तो फिर यह द्वापर युग वाले रजोगुण समय के ऋषि, मुनि कैसे त्रिकालदर्शी बन सकते हैं। त्रिकालदर्शी, त्रिमूर्ति, त्रिनेत्री सिर्फ एक परमात्मा शिव को कह सकते हैं, जो स्वयं इस कल्प के अन्त में आए सारी रचना का अन्त दे देते हैं। वहाँ सतयुग में प्रालब्ध भोगनी है,

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वहाँ यह ज्ञान नहीं रहता कि हम ब्रह्मावंशी ब्राह्मण ही सिर्फ मास्टर त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बनते हैं, बाकी सारे कल्प के अन्दर कोई को भी ज्ञान नहीं मिल सकता है, न देवताओं को न मनुष्यों को त्रिकालदर्शी कह सकते हैं। अच्छा, ओम् शान्ति।

चढ़ाओ नशा...

कौन हो तुम...

सोचो तुमको कौन मिला है, कौन तुम्हारा साथी है।

So, Value this Time

कहीं अंत में ये पश्चाताप न हो कि "हाथ को तो आया था पर मुंह पे लगा ना सके।"
जिसको ही बाबा ने कहा है कि अंत में दुनिया वालो की आंख में साधारण आंसू होगे और बाप का बनकर प्राप्ति ना कर सकने वालों की आंखों में खून के आंसू होंगे। "

10-09-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अव्यक्त इशारे -

Call of time/समय की पुकार

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

Never - Ever

Even at the level of Thought

कभी भी अपने पुण्य के बदले प्रशंसा लेने की कामना भी नहीं रखना,

खतरा/Danger

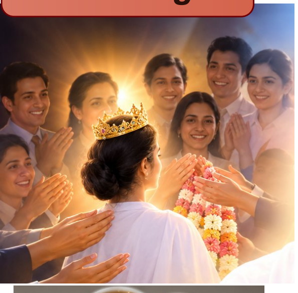

यह हद की प्रशंसा को स्वीकार करना सदाकाल की प्राप्ति से वंचित होना है

ये पक्का समझ लो..

Note it down

इसलिए सदा देने में सागर के समान सम्पन्न बनो।

आपका हर बोल औरों को (1) खुशी में, (2) बाप के स्नेह में, (3) अतीन्द्रिय सुख में रूहानी आनन्दमय जीवन का अनुभव कराये और

हर कर्म सर्व आत्माओं के प्रति सदा सहयोग की प्राप्ति कराने वाला हो।

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Aug 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Aug 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

11.10 वरदान दो :

अमृतवेले चारों ओर के तमोगुणी वातावरण व वायब्रेशन के वायुमण्डल में प्राय: लोप स्थिति का समय होता है अर्थात् तमोगुण का प्रभाव दबा हुआ होता है। ऐसे समय पर सहज ही पुकार सुनकर उपकार होता है। पुकार सुनना भी सहज है और उपकार करना भी सहज है। वरदान लेना भी सहज है और दान देना भी सहज है क्योंकि वातावरण वृत्ति को बदलने वाला होता है। ऐसे समय पर, आप सर्व

समझा?

ये पक्का समझ लो..

अमृतवेला और सूक्ष्म सेवा

Point to be Noted

वरदानी आत्माओं की स्वयं की स्थिति भी, बाप की विशेष वरदानों की छत्रछाया के कारण बाप के समान सम्पन्न और दातापन की होती है। ब्रह्मलोक के निवासी बाप विशेष रूप से ज्ञानसूर्य की लाइट और माइट की किरणें विशेष बच्चों को वरदान के रूप में देते हैं। इसालिए इस समय को 'ब्रह्म-मुहूर्त' का समय कहते हैं।

पुछो अपने आप से...

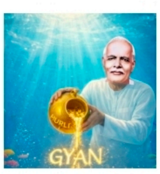

**Conditions Applied Very strictly

क्या इस समय पर आप स्वयं का सारे दिन की श्रेष्ठ स्थिति वा कर्म का 'मुहूर्त' निकालते हो ? जैसा मुहूर्त निकालना चाहो वह निकाल सकते हो। साथ-साथ अव्यक्त वतनवासी ब्रह्मा बाप भाग्यविधाता के रूप में अमृतवेले भाग्य अर्थात् अमृत बाँटते हैं। जितना भाग्य रूपी अमृत ब्रह्मा बाप द्वारा लेना चाहो वह ले सकते हो। लेकिन बुद्धि रूपी कलश अमृत धारण करने के योग्य हो। किसी भी प्रकार का विघ्न या रुकावट न हो। तो ऐसे समय पर लेना और देना साथ-साथ चलता है। वरदानी और महादानी दोनों पार्ट साथ-साथ चलते हैं। ऐसी स्थिति में स्थित होने वाली उपकारी आत्माओं को, आत्माओं की पुकार भी स्पष्ट सुनाई देगी। इतनी स्पष्ट सुनाई देगी जैसे कानों में कोई बात कह रहा है। भक्तों की आवाज़ भी सुनायी देगी। ऐसे समझेंगे जैसे यहाँ सचमुच कोई बुला रहे हैं। अमृतवेले विशेष (1) भक्तों की पुकार सुनों, (2) दु:खी आत्माओं के दु:ख की पुकार सुनो, (3) प्यासी आत्माओं के प्रार्थना की आवाज़ सुनो, तो कभी भी नींद नहीं आयेगी। समझा ?